श्री कृष्ण-चालीसा

मंगलाचरण



खेमराज श्रीकृष्णदास
प्रकाशन,



श्री कृष्ण-चालीसा
मंगलाचरण

रचियता :-

साहित्य मनीषी।
पं० ब्रह्मनारायण पाण्डेय 'ब्रह्म'।
साहित्य रत्न।

संस्करण : अप्रैल २००९, सम्वत् २०६६

मूल्य ५ रुपये मात्र

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

दोहा

श्री गणेश पद वन्दिके, धरि शारद को ध्यान,
कृष्ण चरित वर्णन करूं, जासों हो कल्यान।।

चौपाई

जय मुकुन्द मधुसूदन प्यारे। देवकीनन्दन नन्द दुलारे।।१।। मनमोहन माधव गोपाला। गरुडध्वज जय दीनदयाला।।२।। नारायण श्रीपत

नंदलाला।।गुणसागर जय, जयति
कृपाला।।३।। जय यदुनन्दन जय
असुरारी। वंशीधर सन्तान-
सुखकारी।।४।। जय नटवर जय जय
गिरिधारी। जय वृन्दावन विपिन -
विहारी।।५।। वासुदेव जय जयति मुरारि।
राधावल्लभ जय कंसारि।।६।। जय केशव

वैकुंठ विलासी। रमारमण बल आनन्द रासी।।७।। क्षीर-सिन्धुशायी अविनासी। त्रिभुवन-पति द्वारिका निवासी।।८।। चक्रपाणि जय भव भयहारी। छवि-निधि जय पीताम्बर धारी।।९।। जय नरहरि वामन प्रणपालक। जय जय कृष्ण असुरकुलघालक।।१०।। मोर मुकुट

कुण्डल छवि छाजत। शंख, चक्र, गद, पद्म विराजत।।११।। कौस्तुभमणि बनमाला धारे। मुरली अधर नयन रतनारे।।१२।। लीला अमित अपार तुम्हारी। गावत शेष शारदा हारी ।।१३।। नारद शुक सनकादि मुनीशा। सुर नर मुनि सब नावत शीशा।।१४।। अघनाशक

है नाम तिहारो। अगणित पापिन को है तारो।।१५।। सपनेहुँ में जो सुमिरण करही। सांसारिक दुःख कबहुँ न परहीं।।१६।। नाम रटत गणिका अरुव्याधा। भयो पार भव जल़धि-अगाधा।।१७।। मरत अजामिल सुमिर्यो नामू। दीन जानि दीन्हों निज ठामू।।१८।। जल बूडत

गजराज उबारो। ग्राह मारि सुख दीन अपारो।।१९।। संकट में प्रह्लाद पुकारो। खंभ फारि हिरणाकुश मारो।।२०।। ध्रुव ने जप्यो आपको नामा। ध्रुव लोक पायो विश्रामा।।२१।। सभामध्य जब द्रुपदकुमारी। त्राहि त्राहि भाष्यो बनवारी।।२२।। वसनरूप ह्वै तुरतहिं प्रकट्यो। कौरव सभा अचम्भो

लेख्यो ।।२३।। लाक्षागृह पांडवन बचायो।
अग्नि ज्वाल सब निज उर धार्‍यो।।२४।।
अघा, बका, कंसादिक मारी। मातु पिता की
वन्दि निवारी।।२५।। विश्व मोहिनी रूप
बनायो। क्षण में भष्मासुरहिं जलायो ।। २६।।
नख पर गिरिवर धारण कीन्हों। वृजवासिन
को बहु सुख दीन्हों।।२७।। वृन्दावन में रास

रचाये। गोपिनको मनमोहन भाये।।२८।।
गीता ज्ञान दियो अर्जुन हीं। रण मध्यहिं
मेट्यो सब भ्रमहीं।।२९।। सदा प्रेम के हो
तुम चेरे। बिना प्रेम नहिं आवत नेरे।।३०।।
प्रेम वश्य हो हे यदु नन्दन। पारथ को तुम
हाँ क्यो स्यंदन।।३१।। कुरुपति के मेवा ताजि
दीन्हा। साक विदुर घर भोजन कीन्हा ।।३२।।

सेवत तुम्हें, सुलभ फलचारी। जयति-जयति जय कुंज-विहारी।।३३।। मैं लोभी मूरख खल कामी। त्राहि त्राहि हे अन्तर्यामी।।३४।। कछु अदेय नहीं है प्रभु तोरे। बसहु सदा मन-मानस मोरे ।।३५।। तुम्हें छाँड़ि काके ढ़िग जाऊँ। दुख गाथा अब काहि सुनाऊँ।।३६।। नाथ भक्ति अपनी मोहीं दीजै।

चरण कमल कर सेवक कीजै।।३७।।
तव प्रेमहिं अटक्यो मनमोरा। ध्यान करौं
निशि-वासर तोरा।।३८।। हे भक्तों के प्राण
अधारा। मोहिं केवल तोर सहारा।।३९।। मैं
सेवक तुम ठाकुर मोरा। दया करहु वसुदेव
किशोरा।।४०।।

दोहा

अघनाशक पावन करण, मंजुल मंगल मूल।
'ब्रह्म' कवि विनती करे, हरेहु नाथ भवशूल।।४१।।

श्री कृष्ण-विनयाष्टक

हे बनवारी कुंजबिहारी रासबिहारी धूममचैया । हे अघहारी कृष्ण मुरारी हे गिरिधारी चक्र धरैया। हे गोपाला दीन दयाला हे नंदलाला चीर हरैया। भवसिन्धु अगाध में डुबि रह्यों अब बाँह गहो जसुदा के कन्हैया।।१।। छविं देखि लजात मनोज

तेरी सुर-आदिक है सब लेत वलैया। प्रतिपाल करो सिगरे जग को तुम दासन के अभिलाष पुरैया।। मुझ अनाथ के नाथ तुम्हीं तुम जदुनाथ हो पेट भरैया। भवसिन्धु अगाध में डूबि रह्यों, अब बाँह गहो जसुदा के कन्हैया।।२।। भूभार उतारनहार प्रभो तुमही शरणागत के

रखवैया। छोडि तुम्हें अब जाऊँ कहाँ हरि,
आय परि यह घोर समैया।। संकट भार
न जात सहो हे नाथ नहीं कोउ दुःख
हरैया। भवसिन्धु अगाध में डूबि रह्यों
अब बाँह गहो जसुदा के कन्हैया।।३।।
केवल तेरो भरोसो हमें प्रभु ऐ पतितों के
मोक्षदेवैया। गणिका, व्याध अजामिल से

खल कोटिन के तुम पार करैया।। जाको सहायक कोई नहीं उसके तुमहीं हो धीर धरैया। भवसिन्धु अगाध में डूबि रह्यों अब बाँह गहो जसुदा के कन्हैया।।४।। कर जोड पुकारत हूँ कबसे विनती सुनलो हमरी जदुरैया। कौन सी चूक परी जनसे अपराध करो सब माफ गुसैंया।। सब

कारज पूर्ण करो हमरे, तुमही हो मेरी अर्जी सुनैया। भवसिन्धु अगाध में डूबि रह्यों अब बाँह गहो जसुदा के कन्हैया।।५।। जय मुकुन्द मधसूदन प्यारे, कृष्ण कन्हैया तुम्हीं तो हो। भुवन चारिदश घट घट ब्यापी, ज्योती रमैया तुम्हीं तो हो। मनमोहन, माधव, गोपाला, गरुडध्वज

जय दीनदयाला। देवकी-नन्दन नन्द के लाला धेनुचरैया तुम्हीं तो हो।।६।। बंशीधर सन्तन सुखकारी जय यदुनन्दन कृष्ण मुरारी। गुणसागर जय जय बनवारीअसुर मिटैया तुम्हीं तो हों।। जय वृन्दावन विपिन बिहारी, जय नटवर जय जय गिरिधारी। श्री नारायण कुंज बिहारी, वेणु बजैया

तुम्हीं तो हो।। जय केशव वैकुण्ठ विलासी
रमारमण बल आनन्द राशी। वासुदेव
जय राधावल्लभ कंस दलैया तुम्हीं तो
हो।।७।। क्षीरसिन्धुशायी अविनाशी
त्रिभुवनपति-द्वारका निवासी। सर्व कला
पूरण गुणराशी रास रचैया तुम्हीं तो हो।।
चक्रपाणी जय भव-भयहारी छवि-निधि

जय पीताम्बर धारी। गो द्विज अरु भक्तन हितकारी एक दिखैया तुम्हीं तो हो।। जय नरहरि वामन प्रणपालक जय जय कृष्ण असुरबल-घालक। दीन-बन्धु सचराचर-पालक दुःख हरैया तुम्हीं तो हो।।८।।

दोहा

यह अष्टक यदुनाथ का कह कवि "ब्रह्म" बखान। पढै भक्तगण प्रेम से तिनकर हो कल्यान।।

आत्मनिवेदन

रायबरेली जिला में, जगतपुरा है ग्राम।
बेहटा पोस्ट मुकाम है, तहां दास को

धाम।। कान्यकुब्ज कुलमें जनम, पाण्डे
पद विख्यात। जगमें ताकी साख अब,
कोटिकोटि दर्शात।। वाही कुल में उदित
भे,नन्दराम जिमिनाम। तिनके औरस पुत्र
है, ब्रह्म नारायण नाम। जनहित में कविता
रची नही बखान्यो ज्ञान।श्री वेंकटेश्वर
प्रेस को दीनि है, याहि न छापैं आन।।

आरती

भगवान् कुंजबिहारी

आरती कुंजबिहारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी।। (टेक) गलेमें बैजंतीमाला, बजावै मुरलि मधुर बाला। श्रवनमें कुण्डल झलकाला, नंदके आनँद नँदलाला।। श्रीगिरधर०।। गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली, लतनमें ठाढ़े बनमाली, भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक, चंद्र-सी झलक, ललित छबि स्यामा प्यारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी।।

कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दरसनको तरसै, गगन सों सुमन रासि बरसै, बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग, अतुल रति गोपकुमारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी।। जहाँ ते प्रगट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा, स्मरन ते होत मोह-भंगा, बसी सिव सीस, जटाके बीच, हरै अघ कीच, चरन छबि श्रीबनवारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी।। चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही बृन्दाबन बेनू, चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू, हँसत मृदु मंद, चाँदनी चंद, कटत

भव-फंद, टेर सुनु दीन दुखारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी।। आरती कुंजबिहारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी।।

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

